सामरियों के बीच रहना

(4:16-18)

यीशु ने कुएं पर उस सामरी स्त्री के साथ अपनी चर्चा के निर्णायक मोड़ पर पहुंचकर उसे अपने पति को लाने के लिए कहा। उसके यह उत्तर देने पर कि उसका कोई पति नहीं है, यीशु ने कहा, ''तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति के हूं। क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है'' (4:17, 18)। असफल विवाहों और छिन्न-भिन्न वचनबद्धताओं से उसका अतीत कूड़े की तरह बदबूदार और भविष्य अनिश्चित हो गया था।[1] एक बात तय थी कि उसका जीवन नियन्त्रण से बाहर था।

हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं कि कुएं पर आने वाली वह स्त्री सूखार नगर में लोगों की प्रतिनिधि थी भी या नहीं। क्या नगर के लोग उसे देखकर भौंहें चढ़ाते थे या औसतन नागरिक वैसे ही थे ? हमें सम्भवत: इसका कभी पता नहीं चल पाएगा। परन्तु इस अध्ययन में हम आज एक ऐसे समाज में रहने की उलझन पर प्रकाश डालना चाहते हैं जहां सामरी स्त्री का अनुभव आम बात है। वर्तमान प्रवृत्ति इस बात का संकेत देती है कि अमेरिका में होने वाले सभी नये विवाहों में से आधे टूट जाएंगे। यद्यपि अमेरिका में बहुविवाह की बात पुरानी हो गई है, फिर भी वहां ''क्रमिक बहुविवाह'' अर्थात एक समय में एक विवाह करके बहुत से विवाह करना सामान्य बात है। सबसे परेशान करने वाली बात यह है कि कलीसिया भी उसी संस्कृति की तरह बन रही है जिसमें वह स्वयं रहती है। इस कारण, यह आवश्यक है कि सामरिया के कुएं पर थोड़ी देर रहकर अपने लिए पवित्र शास्त्र का संदेश ''सामरियों के बीच रहने'' वाले लोग बनकर खोजें।

अपने समय के ''सामरियों'' के बीच सफलतापूर्वक रहने के लिए, हमें सबसे पहले कुछ ठोस जानकारी की आवश्यकता है। यह आज हमारी मंज़िल नहीं परन्तु पहला महत्वपूर्ण ठहराव है।

एक दोहरी वचनबद्धता

कई बार किसी ऐसे दम्पति से बात करने पर जो तलाक लेने वाले हों, मैं उन्हें इस तरह की बात करते सुनता हूं: ''इस सम्बन्ध से हम तंग आ चुके हैं और इससे छूटकर हम बहुत खुश रहेंगे। हम विवाह के इस बंधन में क्यों न रहें जो इतना कठिन है आखिर आजकल, कौन इकट्ठा रहता है ?'' इन शब्दों में यह विश्वास मिलता है कि हम संसार के दूसरे लोगों

की तरह ही मसीही लोगों से भी वही उम्मीद कर सकते हैं। ऐसा विचार शैतान का झूठ है, क्योंकि पवित्र शास्त्र तो बिना किसी क्षमा के मसीही लोगों के व्यवहार के उच्च मापदण्ड की शिक्षा देता है।

विश्वासियों के लिए परमेश्वर के मापदण्ड के बारे में पौलुस ने ऐलान किया:

> मैंने अपनी पत्री में तुम्हें लिखा है, कि व्यभिचारियों की संगति न करना। यह नहीं, कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, लोभियों, या अन्धेर करनेवालों, या मूर्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता। मेरा कहना यह है; कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अन्धेर करनेवाला हो, तो उस की संगति मत करना; बरन ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना। क्योंकि मुझे बाहरवालों का न्याय करने से क्या काम? क्या तुम भीतर वालों का न्याय नहीं करते? परन्तु बाहरवालों का न्याय परमेश्वर करता है: इसलिए *उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो* (1 कुरिन्थियों 5:9-13)।

इन आयतों में एक स्पष्ट ''दोहरा मापदण्ड'' दिखाई देता है। मसीही लोगों को अनैतिक मसीहियों से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए, परन्तु उन्हें अनैतिक गैर-मसीहियों से सम्बन्ध रखने की अनुमति है। क्यों? क्योंकि गैर मसीही लोगों के बजाय मसीही लोगों से कहीं अधिक उम्मीद की जाती है। जब कोई मसीही अपने व्यवहार को यह कहकर उचित ठहराने का प्रयास करता है कि ''सब ऐसे ही कर रहे हैं'' तो हमें उसे यह उत्तर देना चाहिए, ''हां, परन्तु उनकी अपेक्षा मसीही होने के कारण परमेश्वर हम से अधिक उम्मीद करता है!''

रोम के मसीहियों के नाम अपने पत्र में, पौलुस ने पहले ग्यारह अध्याय डॉक्टरिन की शिक्षा तथा मुद्दों पर लिखे थे। फिर वह व्यवहार सम्बन्धी मुद्दों को इन शब्दों में सम्बोधित करने लगा:

> इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो (रोमियों 12:1, 2)।

इस आयत के जे. बी. फिलिप्प का अनुवाद ''अपने आपको संसार के स्वभाव में न ढलने दो'' है। संसार का मार्ग अलग है और मसीही लोगों का अलग। हमारे जीवनों का उद्देश्य संसार की स्वीकृति पाना नहीं बल्कि परमेश्वर के प्रति समर्पण है।

''शरीर के काम'' और ''आत्मा का फल'' के बारे में लिखकर पौलुस ने संसार के मार्ग और मसीही व्यक्ति के मार्ग में विषमता को और भी स्पष्ट कर दिया है:

शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के जैसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं (गलातियों 5:19-23)।

परमेश्वर के बालक तथा इस संसार के लोगों के जीवन में पाया जाने वाला स्पष्ट अन्तर यह है कि वे दोनों ही पूर्णतया दो अलग-अलग मार्गों पर चल रहे हैं। हमें जिस बात से हैरान होना चाहिए वह यह नहीं है कि हम अपनी संस्कृति से अलग और बाहर हैं बल्कि हमारी हैरानी और चिंता यह होनी चाहिए कि हम अपने आपको भी अपने इर्द-गिर्द के लोगों की तरह ही पाते हैं! क्या आपने ध्यान दिया कि विवाह में ''शरीर के काम'' और ''आत्मा का फल'' कितने प्रासंगिक हैं? इसलिए हम विवाह के प्रति मसीही व्यक्ति और एक गैर मसीही की सोच में बहुत बड़े अन्तर की उम्मीद करेंगे।

जीवनभर की प्रतिबद्धता

मलाकी ने तलाक के प्रति परमेश्वर की घृणा के बारे में लिखा: ''क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, कि मैं तलाक से घृणा करता हूं, और उससे भी जो अपने वस्त्र को उपद्रव से ढांपता है। इसलिए तुम अपनी आत्मा के विषय में चौकस रहो और विश्वासघात मत करो, सेनाओं के यहोवा का यह वचन है'' (मलाकी 2:16)। सावधान रहें कि कहीं आप इस आयत का गलत अर्थ न निकाल लें। यह आयत यह नहीं कहती कि परमेश्वर तलाकशुदा लोगों से घृणा करता है बल्कि यह कि परमेश्वर स्त्री त्याग अर्थात तलाक से घृणा करता है! परमेश्वर की नज़र में तलाक एक वाचा को तोड़ना अर्थात वचनबद्धता का त्याग करना है। इसके अतिरिक्त, यह परमेश्वर के अपने आपको पहले स्थान पर रखने की बात को काटकर उसके दो भाग करना है। यीशु ने कहा, ''इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे'' (मरकुस 10:9)। समय के प्रारम्भ से ही लोगों के लिए परमेश्वर की योजना मृत्यु तक एक पुरुष के लिए एक स्त्री की रही है। वह जानता है कि यह आसान नहीं है और संसार के लोग ऐसा नहीं करते हैं, पर वह जानता है कि यही सबसे अच्छा ढंग है। परिणामस्वरूप, वह अपने लोगों को उस उच्च मापदण्ड के अनुसार अपना जीवन बिताने के लिए पुकारता है।

पौलुस ने पहली शताब्दी के कुरिन्थुस की अनैतिक स्थिति में इसी मापदण्ड का प्रचार किया था (1 कुरिन्थियों 7:10-16)। उसने कुरिन्थुस में रहने वाले चेलों को, जिनके जीवन-साथी अभी भी मसीही नहीं बने थे, तलाक न देने के लिए कहा था। ऐसे सम्बन्ध निश्चय ही कठिन थे, और सम्भवत: बहुत से लोग तो यह कह रहे होंगे कि मसीही लोगों के

लिए अपने मूर्तिपूजक जीवन साथियों के प्रभाव से दूर रहना ही ठीक होगा। कठिन परिस्थितियों में भी, पौलुस ने ज़ोर देकर कहा था कि मसीही लोगों के लिए सही बात तलाक न करने और उस वाचा का सम्मान करना है जो उन्होंने बांधी थी। पुनः, परमेश्वर अपने बच्चों के लिए बहुत ही कठोर उच्च मापदण्ड ठहराता है। संसार चाहे जो भी करता रहे, परन्तु परमेश्वर अपने बच्चों से यही अपेक्षा करता है कि वे विवाह के अपने प्रण पर पूरा उतरें।

एक सामुदायिक वचनबद्धता

डेनमार्क के एक दार्शनिक सोरेन केयरकेगार्ड ने एक बार लिखा था, ''मसीही भूमि पर जानकारी का कोई अभाव नहीं है अर्थात वहां अभाव कुछ और ही है और वह ऐसी बात है जिसे एक व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से दूसरे तक नहीं पहुंचा सकता।''[2] सही जानकारी होना इस बात की शुरुआत है कि हम सामरियों में रहने का सामना कैसे करते हैं, ''यही वह बात है जिसकी कमी है।'' मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जिसने विवाह तलाक करने की उम्मीद से किया हो। यहां तक कि रेडियो पर प्रेमी युगल गीतों में भी ''सदा'' या ''हमेशा'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। मैं अक्सर कॉलेज में पढ़ने की आयु वाले दम्पत्तियों को विवाह पूर्व सलाह देता हूं। जब हम तलाक की बात करते हैं, तो मुझे पता होता है कि वे मुझे क्या बताएंगे। ''तलाक में हमारा यकीन नहीं है'' वे दृढ़तापूर्वक दावा करेंगे। ''हम तलाक को कोई विकल्प नहीं मानते।'' यदि विवाह करते समय उन्हें यह सब अच्छी तरह मालूम होता है तो फिर इतने लोगों का तलाक क्यों होता है? स्पष्टतः, कोई और कमी है जिसका महत्व जानकारी होने से अधिक है।

मेरा मानना है कि विवाहों के टूटने की कम संख्या कलीसिया में ही है। पहले स्थान पर, लोग इकट्ठे एक समुदाय में ही रहते हैं, जिससे उन्हें बराबर एक सकारात्मक दबाव मिलता है। जब भी हम इकट्ठे होते हैं तो हमें पचास या साठ वर्षों से इकट्ठे रह रहे लोग दिखाई देते हैं और उन्हें देखकर हमें उत्साह मिलता है। विवाहित लोगों के जीवन से हमें उत्साह मिलता है क्योंकि उनसे हम सीखते हैं कि लोग अपने विवाहित जीवन को बनाए रखने के लिए काम करने को तैयार हैं।

विवाह की वचनबद्धता के लिए कलीसिया भी निर्णायक है क्योंकि इससे हमें एक बड़ा परिवार मिलता है जिसमें रहकर हमारे परिवार संघर्ष कर सकते हैं, उनका पालन-पोषण हो सकता है और वे टूटने से बच सकते हैं। कई बार मुझे डर लगता है कि अमेरिकी मसीही कलीसिया को विवाह के लिए एक सूचना केन्द्र के रूप में देखते हैं, इससे बढ़कर नहीं। इस तरह की मानसिकता को कलीसिया की ओर से शिक्षा, सेमिनारों और वर्कशॉपों की आवश्यकता है जहां से हम ऐसी जानकारी प्राप्त कर सकें और फिर घर जाकर उसे कलीसिया से अलग करने का प्रयास करें। बाइबल का एक और बड़ा नमूना यह है कि हम अपने परिवारों को एक बड़ा समुदाय बना लें।

पौलुस ने इस बात का वर्णन किया कि कलीसिया को परिवार की शिक्षा का एक केन्द्र होना चाहिए जिसमें बूढ़ी महिलाएं नौजवान महिलाओं को सिखा सकें कि मसीही पत्नियां

तथा माताएं कैसे बनना है (तीतुस 2:1-5)। जब कोई कलीसिया इस प्रकार से कार्य करती है, तो युवक या अपरिपक्व लोगों को उम्र, अनुभव तथा समर्थन के आवश्यक संसाधन प्राप्त होते हैं। मुश्किल आने पर हर कोई जरूरतमंदों की सहायता तथा उनका दुख बांटने के लिए आगे आ जाते हैं। उपेक्षा होने या कोई कष्ट आने पर, ''परिवार के सदस्य'' एक दूसरे को उनके व्यवहार के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, और दम्पत्ति को उस समस्या से निजात दिलाने के लिए सहायता करते हैं। मुझे किसी कलीसिया के बारे में सुनकर कि ''वे कठिन घड़ी में हमारे साथ रहे और उन्होंने संघर्ष में हमारा साथ दिया। हमारे लिए तो वे परिवार की तरह हैं!'' बड़ा उत्साह मिलता है।

यदि कलीसिया में इस प्रकार के आवश्यक सम्बन्ध बढ़ाने हैं, तो दम्पत्तियों को यह देखने की जिम्मेदारी लेनी होगी कि वे उस समर्थन से जुड़े रहें जिसकी उन्हें आवश्यकता पड़ेगी। एक बात के लिए, उन्हें उन बुज़ुर्गों और अधिक अनुभवी दम्पत्तियों को देखना चाहिए जो उनके लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्हें चाहिए कि वे अपने मार्गदर्शकों को अपने घरों में खाने पर बुलाएं और उनके साथ समय बिताएं जो उन्हें समझदारी और कोमलता से सुझाव और उत्साहित करने वाला समर्थन दे सकते हैं। विवाह के बाद मैं और मेरी पत्नी, मिसीसिप्पी के एक छोटे से नगर में चले गए थे जहां मैं एक मण्डली में प्रचार करता था और मेरी पत्नी वहां के स्थानीय अस्पताल में काम करती थी। नगर में हम किसी को नहीं जानते थे, पर शीघ्र ही हमें एक बहुत अच्छा मसीही दम्पत्ति मिला जिनका विवाह हुए तीस वर्ष बीत चुके थे। हमारी शादी के पहले दो वर्षों तक, लैरी और विन्नी मुर्रे हमें खाना खिलाते रहे, उत्साहित करते रहे, हमारे साथ ताश खेलते रहे और कलीसिया में आराधना के लिए जाते रहे। अपने पहले घर को एक अच्छा अनुभव बनाने के लिए हम आज भी इसका श्रेय उन्हीं को देते हैं, और जब भी मैं विचार करता हूं कि कलीसिया को अपने सभी परिवारों को कैसे उत्साहित करना चाहिए तो मुझे उन्हीं का ध्यान आता है।

कोई मुश्किल आने से पहले ही पति-पत्नी को चाहिए कि वे बहुत से मसीही मित्र बना लें। एक बार किसी का वैवाहिक जीवन खतरे में पड़ने पर पारस्परिक मित्रता को बढ़ाना असम्भव हो जाता है जो कि हर एक विवाहित व्यक्ति की आवश्यकता है। सभोपदेशक में प्रचारक ने युवकों को सुझाव दिया है, ''अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहिले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिनमें तू कहे कि मेरा मन इनमें नहीं लगता'' (सभोपदेशक 12:1)। मुश्किल का सामना करने की तैयारी का समय तभी होता है जब यह आई न हो, और मुश्किल आने से पहले ही अपने विवाह के लिए समर्थन का नेटवर्क बनाने का समय होता है।

सारांश

ज़रा रुककर अपनी प्रतिज्ञाओं को फिर से दोहराएं। आपको जीवन भर के लिए परमेश्वर के सामने अपने जीवन साथी या बच्चों से प्रेम करने का समर्पण करने के लिए उनकी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

पाद टिप्पणियां

[1]यह पाठ यूहन्ना रचित सुसमाचार पर व्याख्यात्मक अध्ययन के मध्य में सुनाए गए विषयात्मक प्रवचन/उपदेश का एक उदाहरण है। पांच विवाह करने वाली उस सामरी स्त्री से विवाह के जीवनभर की वाचा पर विषयात्मक प्रवचन के लिए एक शानदार अगुआई मिलती है। इसलिए मैंने मण्डली को बताया कि हमें कुएं पर उस स्त्री की कहानी जैसी स्थिति को समझने के लिए कुएं पर एक और सप्ताह ठहरना होगा। [2]फ्रेड बी. क्रैडॉक, *ओवरहियरिंग द गॉस्पल* (नेशविल्ले, टेनि.: अबिंगडन प्रैस, 1978), 9.